दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनाँक : 25-06-2022

प्रकाशनार्थ

आज दिनाँक 25 जून 2022 को दिग्विजयनाथ पी. जी. कॉलेज गोरखपुर एवं साइंस टेक इंस्टीटूट लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में ज़ूम एप के माध्यम से आयोजित सप्तदिवसिय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के चौथे दिन मुख्य वक्ता डॉ आशू ग्रोवर, आई.सी.एम. आर,नई दिल्ली ने **"अनुसंधान प्ररचना के प्रकार"** विषय पर बोलते हुए कहा कि अनुसंधान प्ररचना अनुसंधान समस्या की जांच में निर्दिष्ट चर के उपायों को एकत्र करने और उनका विश्लेषण करने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियों और प्रक्रियाओं का एक समूह है। अनुसंधान प्ररचना के दो मुख्य प्रकार हैं: गुणात्मक और मात्रात्मक। अनुसंधान प्ररचना को वर्गीकृत करने के कई तरीके हैं। एक शोध प्ररचना परिस्थितियों या संग्रह का एक सेट है।कई प्ररचना हैं जो एक शोध में उपयोग किए जाते हैं, प्रत्येक में विशिष्ट फायदे और नुकसान हैं। उपयोग की जाने वाली विधि का चुनाव अध्ययन के उद्देश्य और घटना की प्रकृति पर निर्भर करता है।

उन्होंने आगे बोलते हुए कहा कि जब शोधकर्ता किसी ऐसे विषय का शोध करता है जिसमें उपकल्पना का निर्माण कठिन होता है, तब अन्वेषणात्मक शोध प्ररचना का निर्माण किया जाता है। जैसा कि सेल्टिज ने लिखा है, "अन्वेषणात्मक शोध प्ररचना उस अनुभव का प्राप्त करन के लिए आवश्यक है जो कि अधिक निश्चित अनुसंधान के हेतु सम्बद्ध प्राकल्पना के निरूपण में सहायक होगा।" शोध के विषय के चयन के उपरान्त प्राकल्पना के निर्माण में इस प्रकार की प्ररचना अति महत्वपूर्ण है क्योंकि इस शोध प्ररचना द्वारा किसी सामाजिक घटना अथवा परिस्थिति के अन्तर्निहित कारणों की खोज की जा सकती है। सामाजिक अनुसन्धान में अन्वेषणात्मक अध्ययन का महत्व उसके कार्यों के कारण है। विषय या समस्या के सम्बन्ध में सम्पूर्ण वास्तविक तथ्यों के आधार पर उनका विस्तृत वर्णन करना ही वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प है। इस पद्धति में आवश्यक है कि हमें वास्तविक तथ्य प्राप्त हों तभी हम उसकी वैज्ञानिक विवेचना करने में सफल हो सकते हैं। यदि समाज की किसी समस्या का विवरण देना है, तो उस समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित तथ्य प्राप्त होने चाहिए, जैसे- निम्न श्रेणी के परिवारों का विवरण देना है, तो उसकी आयु, सदस्यों की संख्या, शिक्षा का स्तर, व्यावसायिक ढाँचा, जातीय और पारिवारिक संरचना आदि से सम्बन्धित तथ्य जब तक प्राप्त नहीं होते तब तक हम उसके वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत नहीं कर सकते। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि हम अपना अनुसंधान-अभिकल्प विषय के उद्देश्य के अनुसार बनायें।

मुख्य वक्ता सहित सभी का स्वागत डॉ परीक्षित सिंह ने,अभार ज्ञापन प्रोफ ओम प्रकाश सिंह, प्राचार्य ,दिग्विजयनाथ पी.जी. कॉलेज गोरखपुर ने ,कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती श्वेता सिंह (चैयरमेन मनराज कुंवर सिंह एजूकेशनल सोसाइटी) लखनऊ ने एवं संचालन प्रोफेसर आर के शुक्ला लखनऊ विश्वविद्यालय ने किया।

इस ऑनलाइन कार्यक्रम में सह संरक्षक प्रोफेसर पुरषोत्तम चक्रवर्ती, विजिटिंग प्रोफेसर, रटगर्स स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यू जर्सी, यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका, महाविद्यालय के शिक्षक, अन्य महाविद्यालयों के शिक्षक सहित 229 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

उक्त जानकारी महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ शैलेश कुमार सिंह ने दिया।

डॉ शैलेश कुमार सिंह
मीडिया प्रभारी